श्री गणेशाय नमः

करकं क्षीरसम्पूर्णा तोयपूर्णमथापि वा । ददामि रत्नसंयुक्तं चिरंजीवतु मे पतिः ॥
इति मन्त्रेणा करकान्प्रदद्याद्विजसत्तमे । सुवासिनीभ्यो दद्याच्च आदद्यात्ताभ्य एववा ॥
एवं व्रतंया कुरुते नारी सौभाग्य काम्यया । सौभाग्यं पुत्रपौत्रादि लभते सुस्थिरांश्रियम् ॥

करवा चौथ व्रत कथा

कार्तिक वदी चतुर्थी को करवाचौथ कहते हैं। इस में गणेश जी का पूजन व व्रत सुहागिन स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घ आयु के लिये करती हैं। प्राचीन काल में द्विज नामक ब्राह्मण के सात पुत्र और एक वीरावती नाम की कन्या थी। वीरावती प्रथम वार करवाचौथ व्रत के दिन भूख से व्याकुल हो पृथ्वी पर मूर्छित होकर गिर पड़ी, तब सब भाई यह देख कर रोने लगे और जल से मुँह धुलाकर एक भाई वट के वृक्ष पर चढ़कर छलनी में दीपक दिखाकर बहन से बोले कि चन्द्रमा निकल आया। उस अग्निरूप को चन्द्रमा समझकर दुःख छोड़ वह चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन के लिये बैठी। पहले कौर में बाल निकला, दूसरे कौर में छींक हुई, तीसरे कौर में ससुराल से बुलावा आ गया। ससुराल में उसने देखा कि उसका पति मरा पड़ा है, संयोग से वहाँ इन्द्राणी आई और उन्हें देखकर विलाप करते हुए वीरावती बोली कि हे माँ! यह किस अपराध का मुझे फल मिला। प्रार्थना करते हुये बोली कि मेरे पति को जिन्दा कर दो। इन्द्राणी ने कहा कि तुमने करवाचौथ व्रत में बिना चन्द्रोदय के चन्द्रमा को अर्घ्य दे दिया था यह सब उसी के फल से हुआ अतः अब तुम बारह माह के चौथ के व्रत व करवाचौथ व्रत को श्रद्धा और भक्ति से विधिपूर्वक करो तब तुम्हारा पति पुनः जीवित हो उठेगा। इन्द्राणी के वचन सुन वीरावती ने विधि-पूर्वक बारह माह के चौथ और करवाचौथ व्रत को बड़ी भक्ति-भाव से किये और इन व्रतों के प्रभाव से उस का पति पुनः देवता सहर्ष जीवित हो उठा । उसी दिन से यह करवा चौथ मनाई जाती है और व्रत रखा जाता है। हे माता! "जैसे तुमने वीरावती के पति की रक्षा की वैसे सबके पतियों की रक्षा करना।"